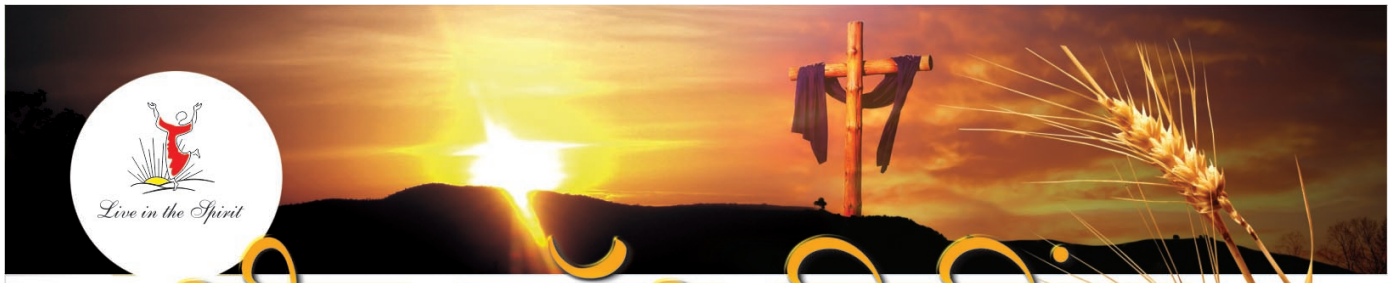

Live in the Spirit

सीड़ फॉर लिविंग

ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज मासिक प्रकाशन मई २०१४

परमेश्वर के उपस्थिति को खोजो

उनका आर्शिवाद हमेशा साथ रहेगा

मनुष्य होने के नाते, हमारा स्वार्थी होना स्वाभाविक है। लगातार सोचना कि, "मेरे बारे में क्या? मेरी जरुरतों के बारे में क्या? मेरी भावनाओं का क्या?" हम अपनी खुशी पाने का पूरा प्रयास करते है, परंतु अंत में हमेशा थके हुए, तनाव से दबे और नाखुश महसूस करते हो।

अक्सर, हमारे दुःख की जड़ असुरक्षा में होती है। हमें भरोसा नहीं होता कि जो हमारे पास हैं, वह हमारे जरुरतों को पूरा करने के लिए काफी है। हम अपने भविष्य को लेकर निश्चित नहीं। हम तो बहुत सी चीजों के बारें में अनिश्चित है। सबसे जरुरी बात हैं, कि हम इस बात का यकीन ही नहीं करते कि परमेश्वर हमारी रखवाली करते है और उनके वादे के अनुसार हमें संभालते है। हम शायद कहे कि हम उनपर भरोसा करते है, लेकिन हमारे कतर्व्य हमारे शब्दों को धोखा देते है।

ज्यादातर लोग अपनी सुरक्षा की भावना का अनुमान पैसे से लगाते है–जितना अधिक पैसा, उतना ही अधिक सुरक्षित महसूस करते है। यहाँ तक कि जिनके पास बहुत ज्यादा है, वे भी थोड़ा और पाना चाहते है। और जबकी परमेश्वर के लिए एक गरीब इन्सान को अमीर बनाना आसान है, लेकिन शायद हमारी भलाई के लिए वो ऐसा करने में प्रवृत्त नहीं होते।

उन लोगों को देखो जिनके पास हिसाब के बाहर पैसे होते है, खासकर युवक, और देखो, उनका जीवन किस दिशा में बढ़ रहा है। वो बेमतलब की चीजों पर उन पैसों को खर्च करते है जो उन्होंने कमाए ही नहीं। वे गर्द, शराब, धुम्रपान, जश्न मनाना, तेज गाड़ियाँ और बाइक्स जैसे चीजों के आदी होते है। संक्षेप में कहा जाए तो, वे खूद को तबाह करने के लिए उस बेशूमार दौलत का इस्तमाल करते है जो उनके पास है।

परमेश्वर यह नहीं चाहते।

जैसे माता पिता अपने दस साल के बच्चे को फरारी उपहार में नहीं देंगे, वैसे ही परमेश्वर भी हमे कुछ चीजें तब तक नहीं देते जब तक उन्हें यह यकीन नही होता कि हम उस चीज को समझदारी से इस्तमाल करने लायक है और उससे हमारा नाश न होगा। इसी कारण येशूने कहा, "इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएंगी। (मत्ती ६:३३)

एक बार हम धार्मिकता को अपने मन में बिठाते है, तो चाहे जो हो जाए हम हमेशा सही चीजें करेंगे। और जहाँ तक परमेश्वर का संबंध है, यह अच्छा है।

इसलिए चूक जाने की चिंता मत करो, आपके रोजमर्रा के सारी जरुरतों को पूरा किया जाएगा। वास्तव में, यदि हम परमेश्वर को प्रथम स्थान दे और हमारी उपलब्दी पाने के लिए उनपर प्रतिक्षा करें, और उचित समय में वे आपके आवश्यकता का भी ध्यान रखेंगे। उनपर भरोसा रखो। जितना हम अपने आपको जानते है, उससे भी ज्यादा वो हमें जानते है। वो जानते है, हमारे लिए क्या भला है। आखिरकार, उन्होंने हमे रचा है।

–ब्रदर मैन्युएल मेरगुल्याओं

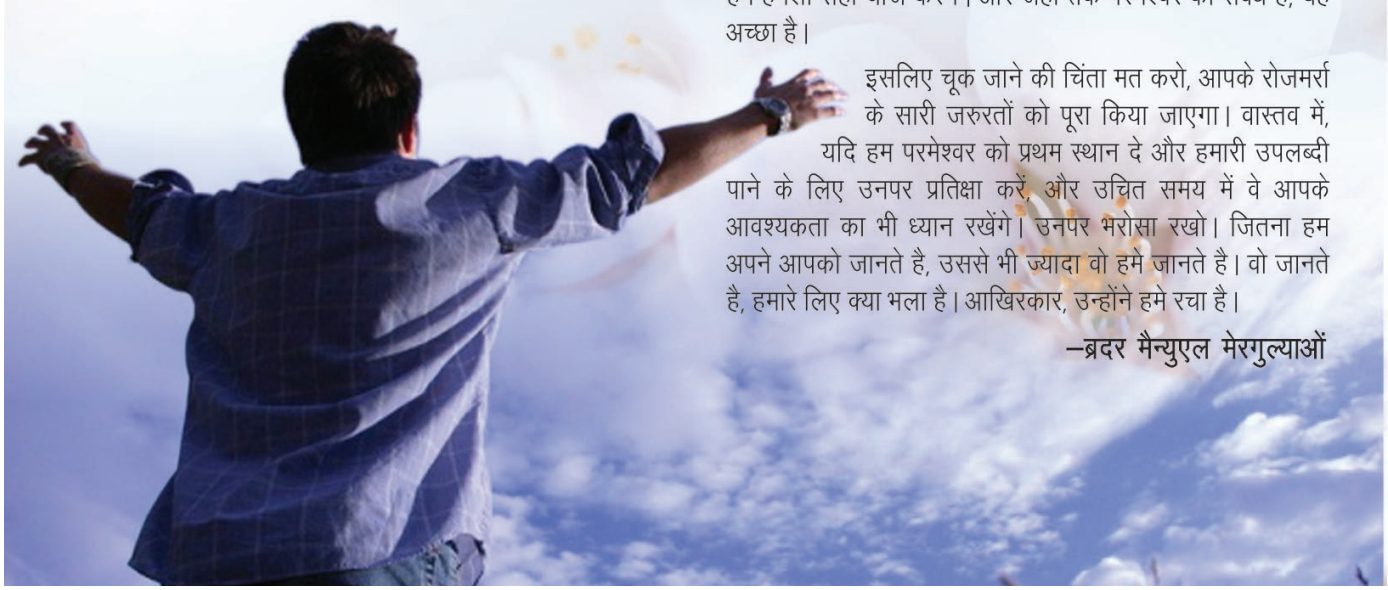

Life In Its *Fullness*

John stood at the foot of "the cross"
When all the other apostles fled
He stood there at the risk of his life
Till Jesus was declared dead.
John was the only apostle, the loved one,
Who died a natural old age death
at the hands of men.
Jesus' words resound in me yet.
"Whoever wants to save his life will lose it
Whoever loses his life for me will save it
Jesus also said,
''I came to give life in its fullness."
So, let us keep fit
The thief comes to steal and destroy,
Bit by Bit.

With the Lord, our Light and Salvation.
Who then shall we fear?
Life is not about the art of living
But a precious gift so dear.
Since Jesus rose from the dead
We too will rise
Then we too can have a
new glorious body
It is no surprise.
I believe I'll see the goodness,
Of the Lord in the land of the living.
Spending more time in His presence
With praise and thanksgiving.
– Benedict Vivian Fernandez

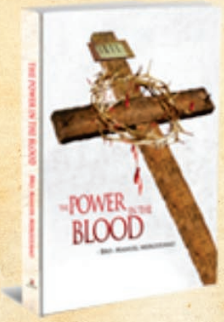

THE POWER IN THE BLOOD

Read this book, which comprises three parts - The Blood of Jesus, Power in the Blood, and Eternal Life in the Blood. It will renew your mind and encourage you to live life to the fullest by helping you to unlock the life-redeeming power in the Blood of Jesus.

The Bible has a lot to say on the subject of marriage. In fact, all marriages would be saved from disaster if couples simply followed the basic principles of marriage prescribed in the Bible. If you have not done that yet or don't even know what those principles are, this book, 'The Principles of Marriage' will serve as your guide.

The Principles Of Marriage

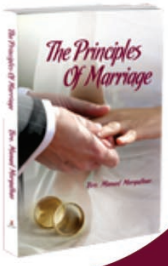

मेरे प्रार्थनाओं की ओर परमेश्वर की यह खामोशी क्यों ?

हम कुछ अध्यायों को जाँचेंगे, जो हमसे कहते है, कि क्यों और कब हमारे उपवास का कोई मोल नहीं मिलता या हमारी प्रार्थनाएँ अनसुनी होती है।

"यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता।" – भजन संहिता ६६:१८

अगर आप गौर करो, तो वचन यह नहीं कहता कि 'यदि मैंने पाप किया'। अगर ऐसा होता तो, परमेश्वर किसी भी मनुष्य को नहीं सुनते। वह कहता है कि "यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता"। अगर मैं अपने दिल में किसी पाप को जगह देती हूँ और उससे प्यार करती हूँ, और उसे करने के लिए मेरे पास चाहे जो बहाना हो या फिर मैं उसे छिपाने की चाहे जितनी कोशिश करु, इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि यह परमेश्वर के लिए मेरे साथ बहस करने की वजह है!

हालाँकि परमेश्वर पाप से नफरत करते है, लेकिन इसका उपाय है। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमे सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (यूहन्ना १:९) तो मुख्य रुप से यह पाप का सत्य नहीं, परंतु यह पाप के लिए प्यार है, पाप करने की इच्छा है, पाप करने का बहाना जो परमेश्वर को हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने की अनुमति नही देता।

यदि मैं परमेश्वर के साथ एक होना चाहती हूँ, और मधुर संगती चाहती हूँ और मेरे प्रार्थनाओं का जवाब चाहती हूँ, तो मुझे अपने पापों का न्याय करना है। मुझे ईमानदारी से पश्चाताप करना है और अपने पापों को कबुल करना है और उनके खिलाफ परमेश्वर का पक्ष लेना है। अन्यथा, परमेश्वर के इच्छा के सामने मेरी इच्छा मृत ठहरेगी। मैं प्रभू येशू के नाम में कुछ भी नहीं माँग सकती, मैं आत्मा में प्रार्थना नहीं कर सकती, मैं परमेश्वर के वचनोंनुसार प्रार्थना नहीं कर सकती। जब मैं अपने ही पापों को अपना आदर्श बनाती हूँ या फिर मेरा दिल किसी गुप्त पाप को वो भक्ति देता है, जो केवल परमेश्वर को ही मिलनी चाहिए, तब मेरा खुद का अंतःकरण मुझे यह विश्वास करने की आज्ञा नहीं देता कि परमेश्वर मुझे आशिर्वादित करेंगे।

इस संसार में किया हुआ मेरा छोटे से छोटा पाप परमेश्वर से मेरे संपर्क को तोड़ता है और मुझे शक्तिहीन बनाता है और मेरी प्रार्थनाओं का कोई परिणाम नहीं होता।

"जो अपना कान व्यवस्था सुनने से मोड़ लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है।" (नीतिवचन २८:९)

फिर से उसे पड़ो। परमेश्वर के वचन का तिरस्कार करना यह उनके लिए घृणा है। लेकिन यदि मैं वचन से प्यार करती हूँ, तो यह परमेश्वर और मेरे बिच एक आनंदमय मेलजोल और संगती बनाता है।

यदि मेरा दिल पवित्र शास्त्र पढ़ने से मुड़ता है, अगर वचन पढ़ने में मुझे कोई रुचि नहीं, या मेरे लिए यह दिलचस्प नहीं है, या फिर मै विनंतीपूर्वक और खुशी से इस पर मनन नहीं करती, तब मेरी प्रार्थना घृणित ठहरती है।

परमेश्वर के वचन और आत्मिक समृद्धि में बहुत ही गहरा संबंध है। भजन संहिता १:३ इसकी तुलना उस वृक्ष से करती है, "जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह करे सफल होता है।"

प्रतिदिन परमेश्वर से आशिर्वाद पाना, आत्मिक उन्नति और क्रिस्ति फल उत्पन्न करना, यह सब प्रभू की व्यवस्था मे आनंदित होने और दिन रात उसपर मनन करने पर निर्भर है।

केवल पवित्र शास्त्र जानना काफी नहीं; ना उसे पढ़ना काफी है; आशिर्वाद उस मे आनंदित होने और दिन रात मनन करने पर निर्भर है।

अगर मैं पवित्र शास्त्र में रुचि नहीं रखती, मैंने उसे निकाल दिया है और अपने दिल से दूर किया है, तो अपनी प्रार्थना में, मैं परमेश्वर को खुश नहीं कर सकती।

येशूने यूहन्ना 15:7 में यह वादा किया है कि, "यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहों माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।"

यदि मसीह के वचन मुझ में बने नहीं रहते है, इसका अर्थ है कि मैं मसीह के इच्छा की ओर सचमुच समर्पण की भावना से बनी नहीं हूँ।

परमेश्वर जो प्रत्येक प्रार्थनाओं का जवाब देता है, वह वही परमेश्वर है जो पवित्र शास्त्र में है। उन्होंने केवल पवित्र शास्त्र लिखा ही नहीं, लेकिन ये वो परमेश्वर है जो आज तक अपने आपको पवित्र शास्त्र में प्रगट करते है और उन्हें अपना आशिर्वाद देते है जो पवित्र शास्त्र से प्यार करते है।

1 कुरिंथियों 2:14 कहता है, "परंतु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।"

अगर मैं परमेश्वर के वचन के प्रति बेपरवाही दिखाती हूँ, तो मुझे यह जानना है, कि मैं एक सांसारिक, शारीरिक मन के अनुसार जी रही हूँ।

जो लोग आत्मा से परिपूर्ण होते है वो परमेश्वर के वचनों से भी परिपूर्ण होते है। स्वाभाविक मन परमेश्वर से अजनबी होता है और पवित्र शास्त्र में दिलचस्पी नहीं रखता। इसी तरह एक सांसारिक और अधार्मिक क्रिस्ति को भी वचन का कोई स्वाद न होने कि संभावना है।

एक माँ ने अपने बेटे के पवित्र शास्त्र के पहले पन्ने पर यह लिखा कि, "यह किताब तुम्हें पाप से दूर रखेगी, या फिर पाप तुम्हें इस किताब से दूर रखेगा।"

जल्द सवेरे एक समय नियुक्त करो, और विनती सहित परमेश्वर के वचन पर मनन करो, परमेश्वर के मन को खोजने की हसरत रखो, और जो कुछ आपको परमेश्वर के वचन से प्राप्त हो, उसके प्रति खुशी से आत्मसमर्पण करो। यदि आप अपने आपको समर्पित करते हो और जल्दबाजी नहीं करते, परंतु परमेश्वर के वचन पर मनन करते हो, तो आप देखोगे कि अपने आप प्रार्थना आपके दिल में आकार लेगी, और यह प्रार्थना पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होगी, एक ऐसी प्रार्थना जिसे सुनकर परमेश्वर खुश होंगे।

जैसे आप परमेश्वर का वचन पढ़ते हो, तो अपनी प्रार्थना में नयापन, सरलता और आनंद पाओगे, जो आपके दिल में आत्मा के फुसफुसाने से शुरु होगा। परमेश्वर का वचन पढ़ने का एक दैनिक शांत समय, उसे याद करना, उसके अनुसार अपने आपको ढालना, परमेश्वर के वचन द्वारा गहरी सफाई की क्रिया, यह सब आपके प्रार्थनिक जीवन में उन्नति का कारण ठहरेंगे।

मेरे दोस्त, परमेश्वर चाहते है कि आप आशिर्वादित और समृद्ध बने। वो सारी प्रार्थनाओ का जवाब देना चाहते है, तो आओ हम सारी बाधाओं को निकालते हुए, उनका मार्ग साफ करें ताकि वे हमारी प्रार्थनाओ का जवाब दे।

– बहन लिनेट मेरगुल्याओं

आगे जारी रहेगा...

शांत रहो!

हम सबने यह कहावत तो सुनी होगीः चुप्पी सुनहरी है। दूसरें शब्दों में कहा जाए तो, जब आप बहुत ही तनावग्रस्त या उत्तेजित होते हो, तो ऐसे में चुप रहना ही उचित है, क्योंकि बोलकर आप केवल अपनी मुसीबतों को बढ़ा सकते हो। लेकिन फिर भी अगर आपने अपना मुह खोलने का फैसला किया ही है, तो बोलने से पहले सोचो।

पवित्र शास्त्र कहता है, कि जीवन और मृत्यु का सामर्थ हमारी जुबान के वश में होता है (नीतिवचन १८:२१)। मिसाल के तौर पर, अगर एक डॉक्टर किसी मरीज को देखने इन्टेन्सिव केर (गहन देखभाल) में जाता है और उसे दया की नजरों से देखकर फिर अपना सिर हिलाते हुए कहता हैः "उसकी स्थिति बहुत ही गंभीर दिखती है। मुझे संदेह है, कि वह कभी भी यहाँ से बाहर निकल पाएगा," यह डॉक्टर मौत बोल रहा है। अपने निराशावादी शब्दों को व्यक्त करके डॉक्टर अपने मरीज से आशा को खंडित कर रहा है, जो जीवित रहने का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है।

दूसरी ओर, अगर डॉक्टर मरीज को यह कह कर प्रोत्साहित करने का फैसला करता है, कि "ओह, मैंने दर्जनों लोगों के साथ ऐसा होते हुए देखा और वे सब ठीक होकर अपने पैरों पर यहाँ से बाहर निकल गये," यह डॉक्टर जीवन बोल रहा है। ऐसे शब्द जल्द ही आत्मा को पुनर्जीवित करते है और तुरंत चंगाई पाने का माध्यम बन जाते है। इसलिए वे कहते है, कि "एक खुश मिजास़ दिल ही अच्छी दवाई है।"

पवित्र किताब कहती है, कि एक धर्मी की बोली बहुतों को पोषण और चंगाई देती है (नीतिवचन १०:२१; १२:१८)। और भजन संहिता की किताब ये चेतावनी देती है, कि अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुँह की चौकसी कर के उससे छल की बात न निकले ऐसा न हो कि परमेश्वर हमारे ही शब्दों को हमारे खिलाफ मोडे और हमे बर्बादी की ओर ले जाए। (भजन संहिता ३४:१३ और ६४:८)

क्या इस्त्राएलि याद है? उन्हें वादे के भूमि पर पहुँचने के लिए पूरे ४० साल लगे थे क्योंकि वे बड़बड़ाते रहे, शिकायत करते रहे और खुद के बारे में एक उपद्रव करने लगे। जब आप कहते हो कि "मेरी इच्छा है कि मैं कभी पैदा ही नहीं होता" या "काश कि मैं मर जाऊँ" या फिर "भाड़ में जाओ" तो ऐसी बकवास बातें बोलकर, आप खुदपर और अपने परिवार पर श्राप लाते हो, आप अलग तरीके से पेश नहीं आ रहे।

इस्त्राएलि बारंबार यह कहते हुए परमेश्वर को परख रहे थे, कि "हमे मिस्त्र देश कभी नहीं छोड़ना चाहिए था। हम सब इसी रेगिस्तान में मरनेवाले है।" और एक दिन परमेश्वरने कहा "आमीन!"

इसी कारण नीतिवचन की किताब कहती है, कि "जो अपने मुँह को बंद रखता है, वह बुद्धि से काम करता है।" इसलिए जो भी आप कहते हो उसपर ध्यान रखो। बहतर है, कि आप शांत रहो, आप क्या सोचते हो उसपर ध्यान रखो क्योंकि आपके विचारों में वो शक्ति है, जो आपके शब्दों को प्रभावित करती है, और आपके शब्दों में वो शक्ति है, जो आपके किस्मत को प्रभावित करती है।

तो अगली बार जब कोई व्यक्ति या कोइ परिस्थिति आपको उकसाती या गुस्सा दिलाती है, तो याद रखो कि आपके पास शांत रहने का वो अधिकार है, जो परमेश्वर की देन है। लेकिन अगर आप शांति खोते हो और अपनी निराशा को जाहिर करने का फैसला करते हो, तो ऐसे में जो भी आप कहोगे, हो सकता है, या फिर जरुर, उसका इस्तमाल आपके खिलाफ किया जाएगा।

इसलिए, (शांत रहो!) परमेश्वर यहोवा के सामने शांत रहो! क्योंकि यहोवा का दिन (बदला लेना का) निकट है। (सपन्याह १:७)

– संपादकीय डेस्क

K4C Corner

What Did Jesus Do?

Jesus Went to Jerusalem with His parents when He was 12 years old. On their way home, Mary and Joseph could not find Him. They were very worried. They looked for three days and finally found jesus back in Jerusalem. He was with the teachers in the temple. What did Jesus do when His parents found Him?

Color all the spaces not containing a dot to make the answer appear.

Jesus Chose to

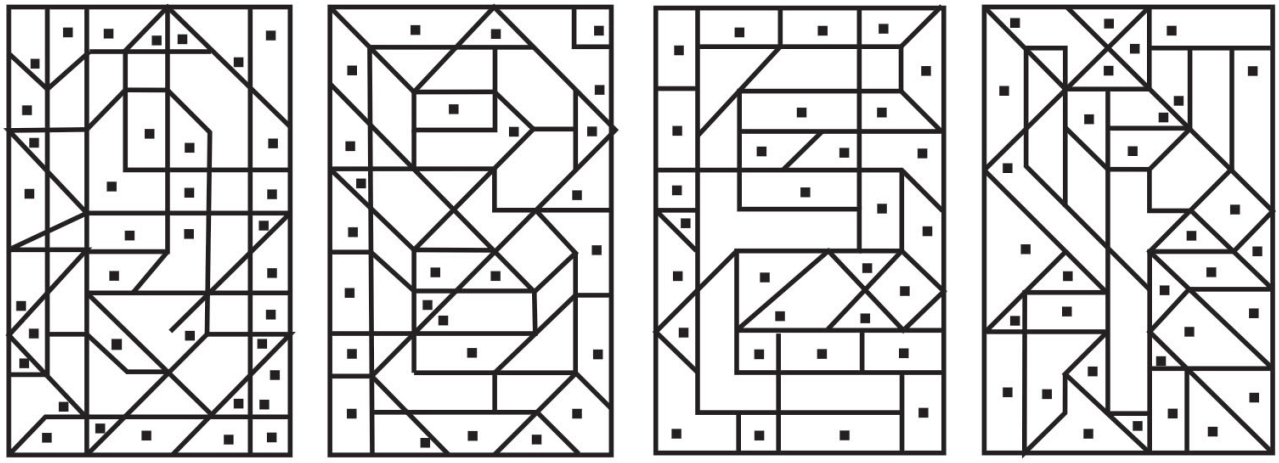

His parents

Friend's Forever

START →

When David was serving King Saul, he became good friends with Saul's son Jonathan. David and Jonathan were such good friends that when Saul decided to kill David, Jonathan warned David so he could get away.

To find out what Jonathan said to David, go around the path twice. First, Put every letter in a circle on the lines below. Then go back and use every letter in a box.

_ _ _ _

गवाहियाँ

मैं एक ख्रिस्ति परिवार में जन्मा और पला बड़ा हूँ, लेकिन मैं कभी भी परमेश्वर मे नहीं था। मुझे ख्रिस्ति होने की पुष्टी और सारे संस्कार प्राप्त हुए लेकिन मैने उनकी कद्र नहीं की। मेरे पिताजी को नई नौकरी मिली और मैं अंतरराष्ट्रीय स्कूल में पढ़ने लगा। मैने कभी भी परमेश्वर की परवाह नहीं की, क्योंकि मेरे जीवन में सबकुछ अच्छा हो रहा था। जब मैं अपने जीवन में सबसे ऊँचे मुकाम पर था तब, शैतान मुझ पर हमला करने लगा। मैने देखा कि मेरे बाँह (हाथ) के नीचे एक धब्बा है। मैने दवाईयाँ और रसायनिक विशेष (स्टेरॉइड) जैसी चीजे लेना शुरु किया और साथ ही खाना भी कम कर दिया क्योंकि मुझे डर था कि कुछ भोजन इस रोग के लक्षण को और भी बढ़ाएगा। फिर भी, मुझे क्षयरोग (टी.बी.) हुआ और मेरा बहुत सा वजन घट गया। साथ ही मैं पेट दर्द और मलेरिया से पिढ़ित था। और जब दूसरा कोई रास्ता ना बचा तब मैं परमेश्वर की ओर मुड़ा। उसी क्षण से सबकुछ मेरी भलाई के लिए होने लगा। मेरा वजन बढ़ गया और मेरी सेहत सुधर गयी। मैं ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज के सभी लोगों को धन्यवाद देता हूँ कि वे लगातार मेरे लिए प्रार्थना करते रहे। यह मेरे विश्वास की वजह से नहीं बल्कि मेरे माता–पिता, ब्रदर मैन्युएल और इस सेवकाई की प्रार्थनओं की वजह से मैं बच गया हूँ। मुझे चंगाई देने के लिए मै परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ और मेरे जीवन में महान चीजें होने की आशा करता हूँ।

– शौन पेपरवाला

पिछले १७ साल से शादीशुदा होने के बावजूद मुझे कोई संतान नहीं थी। चार बार मेरी पत्नी का गर्भपात हुआ आखरी गर्भपात २०१० में हुआ था। इस गर्भपात के बाद हम सलाह के लिए ब्रदर मैन्युएल से मिले। उन्होंने कहा, "बच्चे से ज्यादा परमेश्वर आवश्यक है। दिल से प्रार्थना करो और परमेश्वर सर्वोत्तम करेंगे।" पिछले साल ब्रदर मैन्युएल के जन्मदिन के अवसर पर उन्होंने मेरी पत्नी से कहा कि, "अगर तुम गर्भवती होना चाहती हो तो यह केक खाओ।" उसके तुरंत बाद हमे पता चला कि मेरी पत्नी गर्भवती है। तीसरे महिने में हमने जनेटिक (आनुवंशिक) जाँच की, जिसका नतिजा ठीक नही निकला। लेकिन फिर मुझे पता चला कि यह जाँच हमारे विश्वास के विरुद्ध है क्योंकि यदि हमे रिर्पोट में यह पता चले कि बच्चा असामान्य है, फिर भी हमारा विश्वास हमे उसका गर्भपात करने की आज्ञा नहीं देता। गर्भावस्था के दौरान मेरी पत्नी को बहुत सी परेशानियाँ हुई, जैसे पेट दर्द, उच्च दाब (हाइ प्रेशर)। इस सबके बावजूद मेरा बच्चा पैदा हूआ और ब्रदर मैन्यूएलने उसका नाम यशायाह रखा। मैं ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज के सभी सदस्यों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की। परमेश्वरने मेरी पत्नी और मुझे आशिर्वादित किया है, इसलिए हम दिल से उनका धन्यवाद करते है।

– हरमन मेंडोंसा

मेरी माँ की तबियत ठीक नहीं थी और डॉक्टरने कहा था कि, उनका ऑपरेशन करना बहुत जरुरी है। और साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि ऑपरेशन मुश्किल हो सकता है। हमने ब्रदर मैन्युएल से बात की और बहुत सारी प्रार्थना और मध्यस्थि के बाद हम ऑपरेशन के लिए राजी हो गए। और मेरी माँ का ऑपरेशन बिना किसी परेशानी के पूरा हो गया। अब उनकी सेहत में भी सुधार आ रहा है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि इस मुश्किल घड़ी में उन्होंने हमे संभाला।

– डैनियल डिसूजा

रिट्रिट & शुभसमाचार घोषणा

मुंबई ध्यानसभा (रिट्रिट)
मई ३१ – जून १, २०१४

गोवा शुभसमाचार घोषणा
जून ७–८, २०१४

मँगलोर शुभसमाचार घोषणा
जून १४–१५, २०१४

बुधवार
आर. डी. नेशनल कॉलेज
लिंकिंग रोड,
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–४०००५०, भारत
समयः शाम ५ बजे

मुख्यकार्यालय
एस–४, ब्ल्यु नाइल अर्पाटमेन्टस
सी. एच. एस.लिमीटेड
प्लोट नंबर ३९, वरोडा रोड
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–४०००५०,
भारत

भारत
पी.ओ. बोक्स १६६५५
मुबई – ४०००५०, भारत

Live in the Spirit
BRO. MANUEL MINISTRIES

Printed at Jyoti Printers